vement in future. So I do not agree that whatever has been achieved so far is so little that we have no hope for the future. That is not my view and that is not the Government's view. That is not the view of population experts. There could always be improvement. We could have achieved more. Higher targets, all that is conceded.. But what has been achieved is really no mean achievement by any standard. In regard to incentives, there are two aspects of this. We have now come to the conclusion that apart from whatever incentives we could think of, it should become a natural motivation and not a mercenary motivation. I do many things, a man does many things, without any external incentive so, family planning also should be a part of the normal thinking of people. That is the target which we really want to achieve. But meanwhile while travelling in that direction we will have to see what further incentives could be built into these programmes. So far as disincentives are concerned, I must say that we have to be extremely careful in thinking of disincentives and, at the moment, I cannot say that we have decided on any disincentives as such. So far as incentives are concerned. We are working on a new package of incentives.

MR. CHAIRMAN: Yes, Mr. Mahajan.

श्री प्रमोद महाजन : सभापति जी, परिवार नियोजन एक राष्ट्रीय कार्यक्रम होने के बावजूद भी अपने देश में कुछ धार्मिक गुट और संस्थायें ऐसी हैं जो अपने धर्म के आधार पर परिवार नियोजन के कार्यक्रम का विरोध करते हैं। क्या सरकार ने इसका अध्ययन किया है कि विभिन्न धर्मों के लोगों की गत दस वर्षों में संख्या किस प्रकार से बढ़ रही है, इसमें क्या समानता है? क्या कोई विशेष धर्म वाले ही परिवार नियोजन करते हैं और अन्य धर्म के लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है? यदि कोई धार्मिक गुट या संस्थायें परिवार नियोजन कार्यक्रम का कोई विरोध करती हैं तो क्या सरकार उनके खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने पर विचार करेगी?

श्री पी० वी० नरसिंह राव : मैं समझता हूं कि इस प्रकार का सर्वेक्षण एकदम रिलीजन के आधार पर, धर्म के आधार पर करना ठीक नहीं रहेगा। हम पूरी आबादी को लेते हैं। वैसे भी देखने पर यह पता चलता है कि एक धर्म और दूसरे धर्म में इतना कोई बड़ा अंतर नहीं है जिससे हमको कोई परेशानी हो।

The percentage of Muslim acceptors of sterilization has increased from 4.7 in 1969-70 to 7.1 in 1973-84. बाकी धर्मों के आंकड़े बताईए। इसमें जो मोटिवेशन है वह सब के लिये कामन मोटिवेशन है जैसे कि आर्थिक मोटिवेशन है जिसके बारे में कई बातें कही गई है। यह सब के लिये कामन है। इसलिए हमको इस संबंध में कोई बहुत ज्यादा धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं सोचना चाहिए। हम समझते है कि इसमें कोई इतना बड़ा अंतर नहीं है जिसके कारण हमें कोई इतनी अधिक चिंता करने की आवश्यकता हो।

Unpacked expensive equipment lying in IITs

*107. SHRI ASHWANI KUMAR:
SHRI PRAMOD MAHAJAN:†

Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) the names of IITs where expensive research and other equipment is lying in unpackd condition, as reported in "India Today" dated 15.3.1987, for more than one year; and

(b) what is the cost and the foreign exchange involved in each case?

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Pramod Mahajan.

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF EDUCATION AND CULTURE IN THE MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRIMATI KRISHNA SAHI): (a) According to the information furnished by the Indian Institutes of Technology, no expensive research or other equipment is lying in packing cases for more than a year in any IIT.

(b) Does not arise in view of (a) above.

श्री प्रमोद महाजन : सभापति जी मुख्यप्रश्न जिसका इंडिया टुडे में उल्लेख है, उसके मुख पृष्ठ क. कहान के अनुसार इस वर्ष सरकार द्वारा 20 हजार करोड़ रुपये का अपव्यय हो गया है। इस प्रकार के अनेक उदाहरण जिसमें दिल्ली का भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान भ है इसमें जो उपकरण थे उनक भ' चर्चा है जो कि वर्षों तक उपयोग में नहीं लाये गये। सरकार ने अपने उत्तर में कहा है कि वे डिब्बों में बंद नहीं है डिब्बों को खोल दिया है। लेकिन मैं यह पूछना चाहूंगा कि क्या कोई ऐसे महत्वपूर्ण और कमत' उदाहरण हैं जो वर्षों से डिब्बे तो खुल गये हैं, लेकिन वे उपयोग में नहीं लाये गये हैं ?

श्रीमती कृष्णा साही : सभापति महोदय, माननीय सदस्य के आंकड़े ठक हैं परन्तु बाक सूचना उनकी गलत है। .. (व्यवधान) .. मुझे बोलने द जिए। मैं उत्तर दे रह हूं।

Sir, equipment worth Rs. 2 corers was procured in two phases under Norwegian aid for the Industrial Tribology Centre of the IIT. The first phase was approximately Rs. 1 crore and the second phase approximately Rs. 1 crore. No equipment remains in packing cases for more than one year. All the equipments have been used. Therefore, there is no question of their lying in packages for years.

पहल बात तो यह कि जो उन्होंने सवाल उठाया है वह समान जो खरदा गया है ट्राइबालजी सर्विस आई आईटी दिल्ली को जो नार्वेजियन एड में मिल है इसके बारे में जो समाचार निकाला है वह गलत है। वह इस्तेमाल में आ रहे हैं। कोई भी ऐसा उपकरण वहां नहीं है जो एक साल से अधिक पैकेट में बंद रहा हो। दूसरा फोटोन कोरेलेटर के बारे में यह बताना चाहता हूं कि इंडिया टुडे में जो कहा गया है कि इसके दाम 8 लाख रुपये है यह गलत है। इसका दाम तो एक लाख रुपया है।

The Institute purchased the photon counter with rotomotor in 1975, not photon correlator.

फोटोन कोरिलेटर नहीं है, वह फोटोन काउंटर है। रोटो मटर 1975 में खरदा गया था ...

MR. CHAIRMAN: Question Hour is over. She has effectively prevented you from putting the second supplementary.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: You did not help me. (*Interruptions*)

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Air-India General Sales Agents in UK

*102. SHRI RAJNI RANJAN SAHU: Will the Minister of CIVIL AVIATION be pleased to state:

(a) what criteria or pre-conditions are laid by Air India while appointing General Sales Agents for opening of sales offices in U.K.;

(b) what is the number of sales offices that have been opened for the convenience of the travelling passengers in U.K. by the present General Sales Agents; and

(c) what was the number of Sales Offices being run before the present General Sales Agent took over and how many Sales Offices are operating